UGC CARELISTED
ISSN : 2248-9495
Vol. - XVII, 2020-21

जयन्ती

JAYANTĪ

सान्दर्भिक-पुनरीक्षितवार्षिकशोधपत्रिका

Refereed and Peer Reviewed Annual Research Journal

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

जयपुरपरिसरः, जयपुरम्

जयन्ती

सप्तदशं पुष्पम्

भारतीय संस्कृति में पाण्डुलिपि-संग्रह एवं उसका महत्त्व

डॉ. सुमत कुमार जैन

पाण्डुलिपियों का संरक्षण और संग्रह करना हमारा कर्तव्य है, क्योंकि ये पाण्डुलिपियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। भारतीय साहित्य की समृद्धता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि आज जितना साहित्य प्रकाशित होकर हमारे सामने उपलब्ध है, उसमें कई गुना अधिक साहित्य पाण्डुलिपियों के रूप में देखने को मिलता है, जो ग्रन्थभण्डारों में हमारी राह ताक रही हैं।

पाण्डुलिपियाँ समाज की अमूल्य सम्पत्ति हैं। अतः वे समाज के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इस संसार में अजीव की अपेक्षा जीव जगत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि जीव अपने सुख-दुःख को समझ पाने की शक्ति रखता है तथा अपनी इन स्थितियों को किसी तरह प्रकट करने का प्रयास भी करता है। इस जीव जगत में भी मानव अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि मानव न केवल अपने जीवन की विभिन्न दशाओं को समझता है, अपितु उन अनुभूतियों को विद्या के रूप में अपने बच्चों को सौंपने में सक्षम भी है। भविष्य की पीढ़ीया पूर्वजों द्वारा संचित ज्ञान-राशि के शिखर पर खड़े होकर दूर-दूर तक देख पाने में समर्थ हैं तथा अपनी अनुभूतियों को पुनः जोड़कर उस अतीत ज्ञानराशि को और दृढ़ करती जाती हैं।

पाण्डुलिपियाँ अतीत का ज्ञान भण्डार हैं। डॉ. जिनेन्द्र जैन के अनुसार ''प्राचीन से प्राचीन पाण्डुलिपियाँ, दस्तावेज, प्रशस्तियाँ आदि हमारी प्राचीन संस्कृति और स्मृतियों के प्रतिरूप हैं। इनके माध्यम से ही अतीत और वर्तमान की शृंखला जोड़ी जा सकती है। पाश्चात्य देशों की तुलना में भारत को अतीत के इन प्रतिरूपों (पाण्डुलिपियों-प्रशस्तियों आदि) से समृद्ध कहा जा सकता है।''[1] इस अमृत-स्वरूप ज्ञान भण्डार को जीवित रखने के लिए मानव ने कई प्रकार के आधार चुने। किन्तु, वह इस अनित्य जगत में नित्य आधार प्राप्त कर सकने में सफल नहीं हुआ। किसी ग्रन्थ की शुद्ध प्रतिलिपि तैयार करना अत्यन्त श्रम तथा समय साध्य है। अतः मानव ने चाहा कि पूर्व-पुरुषों द्वारा उपार्जित इस ज्ञान को ऐसा आधार दिया जाये कि यह अपेक्षाकृत काफी समय तक बचा रह सके। अतः उसने कभी मिट्टी की टिकड़ियों पर इस ज्ञान को अंकित किया, तो कभी पाषाण निर्मित खम्भों पर, कभी वृक्षों की छाल पर, तो कभी पंखों पर, कभी लकड़ी पर, तो कभी चमड़े पर और अंततः कागज पर। इसी तरह हजारों वर्षों से इस अतीत-ज्ञान की रक्षा की जाती रही है। इसमें धर्मशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, गणित, ज्योतिष, भूगोल, काव्य, संगीत, नाटक, शिल्पशास्त्र, कथा, दर्शन, आयुर्वेद आदि सभी विषयों के साहित्य सम्मिलित हैं। इन सभी को बचा पाना सर्वथा सम्भव नहीं था। कभी बाढ़ से कुछ बह जाता है, कभी आग से कुछ जल जाता है, कभी भूकम्प से कुछ नष्ट हो जाता है और कभी विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा कुछ नष्ट कर दिया जाता है।

भारत की जलवायु प्रायः नम है। इस तरह की जलवायु में कागज प्रायः 25-30 वर्षों में खस्ता हो जाता है और टूटने लगता है। फिरभी, कागज पर लिखित पाण्डुलिपियाँ भारत में 230 से 250 वर्षों तक

की पुरानी भी मिल जाती हैं। 500 वर्ष पुरानी पाण्डुलिपियों के दर्शन भी कहीं-कहीं पर सम्भव हैं। परन्तु, ऐसी पाण्डुलिपियाँ आराम से पढ़ी नहीं जा सकती, क्योंकि वे छूने पर टूटने लगती हैं। अतः समय रहते ही पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि कराने की व्यवस्था की जाती रही है। किसी राष्ट्र के स्वर्णिम अतीत के दस्तावेजों का संरक्षण कर उसे भावी पीढ़ी को यथावत् हस्तान्तरित करना वर्तमान में हम सभी का दायित्व है।

पाण्डुलिपियाँ विशेषरूप से तीन प्रकार की उपलब्ध होती हैं- ताड़पत्र, कागज और कपड़ा। मुनिश्री पुण्यविजय के अनुसार ताड़पत्र के ग्रन्थ विक्रम की नवीं शती से लेकर सोलहवीं शती तक मिलते हैं। कागज के ग्रन्थ जैन भण्डरों में विक्रम की तेरहवीं शती के प्रारम्भ से अभी तक के मौजूद हैं। यद्यपि मध्य एशिया के यारकन्द शहर से दक्षिण की ओर 60 मील पर कुगियर स्थान से प्राप्त कागज के चार ग्रन्थ लगभग ई. सन् की पाँचवीं शती के माने जाते हैं, परन्तु इतना पुराना कोई ताड़पत्रीय या कागजी ग्रन्थ अभी तक जैन भण्डारों में नहीं मिला। परन्तु, इसका अर्थ इतना ही है कि पूर्वकाल में लिखे गये ग्रन्थ जैसे-जैसे नाशाभिमुख हुए, वैसे-वैसे उनके ऊपर से नई-नई नकलें होती गईं और नए रचे जानेवाले ग्रन्थ भी लिखे जाने लगे।''[2] कुछ प्राचीन और प्रसिद्ध पाण्डुलिपियों का परिचय निम्न है-

1. **बाबेर पाण्डुलिपि-** यह पाण्डुलिपि आक्सफोर्ड के बोल्डाइन लाइब्रेरी में सुरक्षित है। यह पूर्ण प्रति है। इसकी दशा भी अच्छी है। यह गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि में लिखी गई है। पुरालेखकला के माध्यम से यह अनुमान किया गया है कि यह पाण्डुलिपि पश्चिमोत्तर भारत के किसी स्थान पर लिखी गयी थी एवं इसके लिखे जाने का समय प्रायः चौथी शती के आस-पास है।
2. **भखशाली पाण्डुलिपि-** यह पाण्डुलिपि भारत के ज्योतिषीय गणित का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का आधार भुर्जपत्र(भोजपत्र) है। यह पाण्डुलिपि बोल्डाइन लाइब्रेरी आक्सफोर्ड में सुरक्षित है। शारदा लिपि में संस्कृत भाषा में रचित 70 पत्रों का यह ग्रन्थ है। डॉ. हार्नले के अनुसार यह पाण्डुलिपि दसवीं शताब्दी में लिखी गई थी। कुछ लिपि विशेषज्ञ इस ग्रन्थ को बारहवीं शताब्दी में लिखा गया मानते हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने सन 1927 से 1938 के मध्य में अपनी पत्रिका में खंडशः करवाया।
3. **प्राकृत धम्मपद-** मध्य एशिया के रेगिस्तान से यह महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि प्राप्त हुई। पुरालिपि शास्त्रियों के अनुसार यह पाण्डुलिपि दूसरी शताब्दी की है। इसकी भाषा यद्यपि प्राकृत है, किन्तु इस तरह की प्राकृत अन्य बौद्ध-ग्रन्थों में प्राप्त नहीं है। यह पाण्डुलिपि खरोष्ठी धम्मपद, प्राकृत धम्मपद अथवा ड्यूटूयल मैन्युस्क्रिप्ट के नाम से प्रसिद्ध है। यह एक अपूर्ण पाण्डुलिपि है। यह ग्रन्थ सर्वप्रथम कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. वरुआ के सम्पादन में प्रकाशित किया गया था। पुनः प्रो. भागचन्द्र भास्कर द्वारा हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित हुआ है।
4. **गिलगित पाण्डुलिपियाँ-** ये काश्मीर के हस्तलिखित ग्रन्थालय में सुरक्षित हैं। वास्तव में ये प्रायः नष्ट तथा अपूर्ण हैं। लिपि विशेषज्ञों के अनुसार भारतवर्ष में प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थों में ये प्राचीनतम हैं।

इसकी लेखन-शैली अद्भुत है। एक ग्रन्थ के बाद दूसरा ग्रन्थ इस तरह सटाकर लिखा गया है कि सामान्यतया देखने पर यह एक ग्रन्थ जैसा लगता है। इसकी भाषा बौद्ध संस्कृत है अर्थात् पालि तथा संस्कृत का मिश्रित रूप है।

5. **विशेषावश्यक महाभाष्य–** पूज्य मुनिश्री पुण्यविजयजी के अनुसार नवीं शताब्दी की एक ताड़पत्रीय पाण्डुलिपि विशेषावश्यक महाभाष्य की जैसलमेर के खरतर-आचार्य श्रीजिनभद्रसूरि शास्त्रभण्डार में है। यह प्रति लिपि, भाषा और विषय की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

उक्त पाण्डुलिपियों के अतिरिक्त अन्य अनेक पाण्डुलिपियाँ ग्रन्थभण्डारों में उपलब्ध होती हैं। कुछ और विशेष पाण्डुलिपियों का उल्लेख विद्वानों ने किया है। वे इस प्रकार हैं- माइक्रो पाण्डुलिपि, होरियूजी पाण्डुलिपि, मेकार्टने मैन्युस्क्रिप्ट एवं तुरकान पाण्डुलिपियाँ आदि का संग्रह प्राप्त होता है। वर्तमान में एन.एम.एम., नई दिल्ली पाण्डुलिपियों की जानकारी के लिए एक उत्कृष्ट स्रोत के रूप में शोधार्थियों की जिज्ञासा का समाधान कर रहा है।

भारतीय परम्परा में श्रमण संस्कृति का एक विशिष्ट स्थान है। इस संस्कृति में हस्तलिखित एवं उन्हें संगृहीत कर सुरक्षित रखने की परम्परा रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से ज्ञात होता है कि जैन परम्परा में भगवान् आदिनाथ ने अपनी पुत्रियों को लिपिकला का ज्ञान दिया था। भगवान् महावीर के उपदेश मौखिक परम्परा में सुरक्षित रहे हैं। लगभग प्रथम शताब्दी से ही जैन ग्रन्थों को लिपिबद्ध करने का उल्लेख मिलता है। अनुयोगद्वारसूत्र में पत्रारूढश्रुत को द्रव्यश्रुत माना गया है। किन्तु श्वेताम्बर जैन आगमों का लिपिबद्ध स्वरूप आचार्य देवर्द्धिगणि की अध्यक्षता में आयोजित वल्लभी वाचना से मिलता है। यद्यपि इससे पहले गुणधराचार्य, तथा आचार्य उमास्वामी आदि जैसे आचार्य ग्रन्थ लेखन का कार्य प्रारम्भ कर चुके थे।

जैन साहित्य के माध्यम से यह बात स्पष्ट है कि जैन संघ की जीवन-पद्धति में ज्ञान-प्राप्ति सर्वोपरि रहा है। पण्डित दौलतराम जी ने लिखा है–

ज्ञान समान न आन जगत को सुख को कारण।
यह परमारथ जन्म जरा मृत्यु रोग निवारण।।

ज्ञान-प्राप्ति का प्रमुख साधन स्वाध्याय रहा है। स्वाध्याय मुनि के साथ ही साथ श्रावक के लिए भी अनिवार्य माना गया है। आत्मचिन्तन में स्वाध्याय का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। जैन ग्रन्थों के अंत में यह धारणा निश्चित रूप से मिलती ही मिलती है। पन्द्रहवीं शताब्दी के कवि तेजपाल ने वरंगचरिउ के अंत में प्रेरणास्वरूप लिखा है–

एहु सत्थु जो सुणइ सुणावइ, एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ।
एहु सत्थु जो महि वित्थारइ, सो णरु लहु चिरमल अवहारइ।

अर्थात् शास्त्र जो सुनता है और सुनाता है, लिखता है और लिखवाता है और पृथ्वी पर विस्तारित करता है, वह नर शीघ्र ही चिरकाल के पापों से रहित हो जाता है अर्थात् पुण्य प्राप्त करता है।

अतएव स्वाध्याय के कारण ही सम्पूर्ण देश में ग्रन्थ भण्डारों की स्थापना हुई और हो रही है। जैन-अजैन सभी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की सुरक्षा इन ग्रन्थ भण्डारों के प्रबन्ध द्वारा हुई है।

पूज्य मुनिश्रीपुण्यविजय जी के अनुसार जैन परम्परा के साधु भारत के बाहर नहीं गए। इसलिए उनके शास्त्रसंग्रह भी मुख्यतया भारत में ही रहे। भारत का ऐसा कोई भाग नहीं जहाँ जैन पुस्तक-संग्रह थोड़े-प्रमाण में न मिलें। दूर दक्षिण में कर्नाटक, आन्ध्र, तमिल आदि प्रदेशों से लेकर उत्तर के पंजाब युक्त प्रदेश तक और पूर्व के बंगाल, बिहार से लेकर पश्चिम के कच्छ, सौराष्ट तक जैन भण्डार देखे जाते हैं। राजस्थान के ग्रन्थ भण्डारों के सम्बन्ध में प्रो. प्रेम सुमन जैन ने लिखा है कि अकेले राजस्थान में जितनी हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ मिलती हैं, उतनी देश के किसी अन्य प्रदेश में नहीं मिलती। राजस्थान में जैन एवं जैनेतर शास्त्र संग्रहालयों में पांच लाख से भी अधिक पाण्डुलिपियां हैं, जिनके केन्द्र हैं- जैसलमेर, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, बून्दी के ग्रन्थागार, जिनमें पाण्डुलिपियों के रूप में साक्षात् सरस्वती एवं जिनवाणी के दर्शन होते हैं। इन ग्रन्थ भण्डारों में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा की पाण्डुलिपियाँ विद्यमान हैं। इन सभी भाषाओं में जैनाचार्यों, साधुओं, भट्टारकों एवं पंडितों ने रचनाकर संग्रहालयों के साहित्यसंग्रह को सर्वाधिक उपयोगी बनाया है। ये जैन ग्रन्थागार साहित्यिक उपयोगिता की दृष्टि से देश के महत्त्वपूर्ण संग्रहालय हैं।

पाण्डुलिपि-संग्रहालय के दो प्रकार माने जाते हैं- प्रथम व्यक्तिगत और दूसरा संस्थागत। पूज्यमुनिश्री पुण्यविजय जी ने भी दो प्रकार के ग्रन्थागारों का उल्लेख किया है व्यक्तिगत मालिकी और सांघिक मालिकी।

व्यक्तिगत

व्यक्तिगत तौर पर पाण्डुलिपियों के संग्रह के लिए अनेक विद्वानों द्वारा प्रयत्न किये गये हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं- कर्नल टॉड, गोरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, टेसीटरी, डॉ. रघुवीर, राहुल सांकृत्यायन, मुनि जिनविजय, मुनि पुण्यविजय, अगरचन्द नाहटा, प्रोफेसर हीरालाल, प्रोफेसर ए. एन उपाध्ये आदि के नाम लिये जा सकते हैं। मुनिश्री पुण्यविजय जी ने व्यक्तिगत पाण्डुलिपि संग्रह के बारे में लिखा है कि वैदिक परम्परा में पुस्तक-संग्रहों का मुख्य सम्बन्ध ब्राह्मणवर्ग के साथ रहा है। ब्राह्मण वर्ग गृहस्थाश्रम प्रधान है। इस वर्ग में पुत्र-परिवार आदि का परिग्रह भी इष्ट है- शास्त्रसम्मत है। अतएव ब्राह्मण-परम्परा के विद्वानों के पुस्तक-संग्रह मुख्यतया व्यक्तिगत मालिकी के रहे हैं, और आज भी है। इन व्यक्तिगत प्रयत्नों के फलस्वरूप अनेक पाण्डुलिपि, शिलालेख, सिक्के, ताम्रपत्र आदि प्रकाश में आये हैं। इस तथ्य की पुष्टि के लिए कहा जा सकता है कि डॉ. टेसीटरी ने विशेष रूप से राजस्थानी साहित्य की खोज कर अनेक महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की जानकारी दी और डॉ. सांकृत्यायन एवं डॉ. रघुवीर ने अनेक कठिनाईयों एवं विपरीत परिस्थितियों के बावजूद तिब्बत और मंजूरिया से अनेक महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ प्राप्त की थी।

संस्थागत

पाण्डुलिपि-संगह के कार्य में अनेक संस्थाओं के प्रयत्न सराहनीय रहे हैं। काशी नागरी प्रचारिणी की प्रकाशित खोज-रिपोर्टों के द्वारा यह विदित होता है कि आज कितनी ही सामग्री अभी गाँव-गाँव और ढाणी-ढाणी में बस्ते-वुगचों में पड़ी हुई अपने उद्धार का इंतजार कर रही है। अनेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी आदि के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ, जिनका आज साहित्येतिहास में उल्लेख मिलता है, ऐसे ही

संस्थागत प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप पाये गये थे। यहाँ कुछ निजी और संस्थागत संस्थानों का नाम उल्लेखनीय हैं, जहाँ पर अनेक और विविध विधाओं की पाण्डुलिपियाँ संगृहीत है। भारत के कतिपय महत्त्वपूर्ण प्राच्य ग्रन्थागार–

1. अडियार पुस्तकालय, अड्यार, तमिलनाडु
2. आनन्दाश्रम पुस्तकालय, पुणे, महाराष्ट्र
3. एशियाटिक रिसर्चेज लाइब्रेरी, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल
4. एशियाटिक सोसाइटि ऑफ बंगाल, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल
5. ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, बड़ौदा, गुजरात
6. गवर्नमेंट ओरियंटल मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास, तमिलनाडु
7. गवर्नमेंट ओरियंटल लाइब्रेरी, मैसूर, कर्नाटक
8. जायसवाल शोध संस्थान, पटना, बिहार
9. त्रावणकोर विश्वविद्यालय प्राच्यग्रन्थागार, त्रिवेन्द्रम, केरल
10. प्राच्य ग्रन्थागार, उज्जैन, मध्यप्रदेश
11. बौद्ध विहार, सारनाथ, वाराणसी
12. भण्डारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे, महाराष्ट्र
13. रायल मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी गंगटोक, सिक्किम
14. वाणीविलास पुस्तकालय, उदयपुर, राजस्थान
15. बिहार एण्ड ओरिसा रिसर्च सोसाइटी, पटना, बिहार
16. श्री रघुनाथ मंदिर पुस्तकालय, जम्मू, जम्मू व काश्मीर
17. श्री विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, पंजाब
18. सरस्वती भण्डार, उदयपुर, राजस्थान
19. सरस्वती भवन, वाराणसी, उत्तरप्रदेश
20. सरस्वती महल, तंजौर, तमिलनाडु
21. संस्कृत कालेज लाइब्रेरी, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल
22. संस्कृत पाठशाला पुस्तकालय, राजापुर, रत्नागिरी, बम्बई
23. संस्कृत साहित्य परिषद्, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल
24. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, बीकानेर, जयपुर आदि

जैन साहित्य की पाण्डुलिपियों के कतिपय मुख्य संग्रहालय

1. जैन पुस्तक भण्डार जैसलमेर, राजस्थान
2. जैन पुस्तक भण्डार, पत्तन, बड़ौदा, गुजरात
3. जैन पुस्तक भण्डार, श्रवणबेलगोला, कर्नाटक
4. जैन शास्त्र भण्डार, जैन मन्दिर, पानीपत, हरियाणा

5. जैन श्वेताम्बर ज्ञान मन्दिर, छाणी, बाड़ौदा, गुजरात
6. जैन सिद्धान्त भवन, आरा, बिहार
7. दिगम्बर जैन पुस्तकालय, रोहतक, हरियाणा
8. दिगम्बर जैन ग्रन्थभण्डार, धरमपुरा, दिल्ली
9. दिगम्बर जैन ग्रन्थभण्डार, मस्जिद हजूर, दिल्ली
10. दिगम्बर जैन ग्रन्थभण्डार, कूचा सेठ, दिल्ली
11. दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, सुखानन्द धर्मशाला, बम्बई
12. प्राकृत, जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, बिहार
13. महावीर जैन पुस्तकालय, दिल्ली
14. जैन मठ पुस्तकालय, मालखेड़ा, कर्नाटक
15. सरस्वती भवन, नागौर, राजस्थान
16. जैन शास्त्र भण्डार, श्रीमहावीरजी, राजस्थान
17. एल.डी. इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्डोलॉजी, अहमदाबाद, गुजरात
18. श्रीमहावीर आराधना केन्द्र, कोवातीर्थ, कोवा, गांधीनगर, गुजरात
19. जैन शास्त्र भण्डार, पाटण, गुजरात
20. प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, मूडबिद्री, कर्नाटक
21. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश

विदेशों में स्थित महत्त्वपूर्ण प्राच्य ग्रन्थालय

1. अमेरिकन ओरियंटल सोसाइटी, न्यू हेवन।
2. इंडियन मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, पेट्रोग्राद, रशिया
3. इंडियन इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, आक्सफोर्ड, इंग्लैंड
4. इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन
5. एशियाटिक म्यूजियम, सेंट पीटर्सवर्ग
6. ओटेनी डाइगाकू लाइब्रेरी, क्योटो, जापान
7. ओरियंटल कालिज लाइब्रेरी, लाहौर, पाकिस्तान
8. ओरियंटल मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, बोन, पश्चिम जर्मनी
9. ओरियंटल लाइब्रेरी कैंडी, सीलोन, श्रीलंका
10. डि. ला सोसिएट एशिएटिक डि पेरिस, फ्रान्स
11. ढाका यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, ढाका, बांग्लादेश
12. दरबार पुस्तकालय, काठमाण्डू, नेपाल
13. बोडलाइन मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, आक्सफोर्ड, इंग्लैंड
14. ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन, इंग्लैंड
15. बिब्लियोथिक नेशनल, पेरिस, फ्रान्स

16. यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, केम्ब्रिज, लंदन
17. रायल एशियाटिक सोसाइटी, लंदन
18. संस्कृत, पालि एन्ड सिंहलीस लाइब्रेरी, सीलोन, श्रीलंका

उक्त कतिपय देश-विदेश में स्थित ग्रन्थागारों का विवरण डॉ. अयोध्याचन्द्र दास द्वारा लिखित पुस्तक पाण्डुलिपि परिचय से दिया गया है।

महत्त्व

आज शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में पुस्तकालय का जो महत्त्व है, वही महत्त्व पूर्व स्थापित ग्रन्थभण्डारों का है। इन शास्त्र भण्डारों के महत्त्व को निम्न विवरण से जाना जा सकता है–

1. शास्त्र-भण्डारों में न केवल धार्मिक साहित्य ही प्राप्त होता है, अपितु काव्य, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित आदि विविध विषयों के ग्रन्थ भी मिलते हैं।
2. मानव की रुचि के अनुकूल कथा, कहानी, नाटक भी उपलब्ध होते हैं।
3. सामाजिक, राजनीतिक एवं अर्थशास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थों का भी संग्रह हुआ है।
4. विभिन्न भारतीय परम्पराओं में लिखे हुए अलभ्य ग्रन्थ संगृहीत मिलते हैं।
5. परम्परा से इतर विद्वानों के टीका-ग्रन्थ भी उपलब्ध होते हैं।
6. इन ग्रन्थ-भण्डारों में गुटके भी संग्रह में होते हैं। ये गुटके बहुत ही महत्त्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि इन गुटकों में साहित्यिक जानकारी के साथ ही साथ ऐतिहासिक सामग्री, पट्टावलियाँ, वंशावलियाँ, बादशाहों के विवरण आदि की भी जानकारी मिलती है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि ग्रन्थ-भण्डार खोज करने वाले शोधार्थियों के लिए शोध-संस्थानों जैसे प्रयुक्त होते हैं। ग्रन्थ-भण्डारों में प्राप्त सामग्री से वर्तमान को सरलता से संवारा जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1 डॉ. जिनेन्द्र जैन, शोधपत्र- प्राकृत पाण्डुलिपि महिवालकहा का प्रतिपरिचय एवं वैशिष्ट्य, राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी- भारतीय परम्परायां प्राकृतभाषायाः साहित्यस्य च अवदानम्, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालय), नईदिल्ली, 10-12 मई, 2012

2. मुनिश्री पुण्यविजयजी, शोधपत्र- ग्रन्थभण्डारों पर एक दृष्टिपात, 17 वां अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन, गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद, 1953

3. वही,

4. देवपूजा गुरोपास्ति स्वाध्यायसंयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने-दिने।। पद्मनंदिपंचविंशतिका

5. मुनिश्री पुण्यविजयजी, शोधपत्र- ग्रन्थभण्डारों पर एक दृष्टिपात, 17 वां अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन, गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद, 1953

सहायक आचार्य

जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,

उदयपुर (राज.)